3. सवैये, कवित्त (रसखान)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रसखान जी का जन्म कब व कहाँ हुआ था?

उ०– रसखान जी का जन्म सन् 1548 ई. में दिल्ली के आसपास हुआ था।

2. रसखान जी किस काव्यधारा एवं किस भक्ति शाखा के कवि थे?

उ०– रसखान सगुण काव्यधारा की कृष्णाश्रयी शाखा के कवि थे।

3. रसखान हिंदी साहित्य के किस काल से संबंधित कवि हैं?

उ०– रसखान हिंदी साहित्य के रीति काल से संबंधित कवि हैं।

4. रसखान कवि का मूल नाम क्या था?

उ०– रसखान कवि का मूल नाम सैयद इब्राहिम था।

5. रसखान के गुरु का क्या नाम था?

उ०– रसखान के गुरु का नाम गोसाई विट्ठलनाथ था।

6. कवि रसखान की दो प्रसिद्ध रचनाओं के नाम बताइए।

उ०– कवि रसखान की दो प्रसिद्ध रचनाएँ हैं– (अ) सुजान रसखान (ब) प्रेम वाटिका।

7. कवि रसखान की सभी कृतियों का संकलन किस रचना में किया गया है?

उ०– कवि रसखान की सभी कृतियों का संकलन 'रसखान रचनावली' रचना में किया गया है।

8. रसखान जी ने अपनी रचनाओं में किस प्रकार की भाषा-शैली का प्रयोग किया है?

उ०– रसखान जी ने अपनी रचनाओं में सरस, सुबोध एवं सहज ब्रजभाषा तथा सरल और परिमार्जित शैली का प्रयोग किया है।

9. रसखान जी ने अपनी कविता में किस प्रकार के छंदों को अपनाया है?

उ०– रसखान जी ने अपनी कविता में कवित्त, सवैया और दोहों छंदों को अपनाया है।

10. रसखान की मृत्यु कब हुई?

उ०– रसखान की मृत्यु सन् 1628 ई. में हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि रसखान मनुष्य, पशु, पक्षी अथवा पर्वत के रूप में जन्म लेने की कामना क्यों कर रहे हैं?

उ०– कवि रसखान मनुष्य, पशु, पक्षी अथवा पर्वत के रूप में जन्म लेने की कामना इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वे किसी भी रूप में जन्म लेकर श्रीकृष्ण की समीपता प्राप्त करना चाहते हैं। वे मनुष्य के रूप में जन्म लेकर गोकुल के ग्वालों के बीच रहना चाहते हैं, पशु के रूप में रसखान जी नंदजी की गायों के बीच रहना चाहते हैं, पक्षी के रूप में जन्म लेकर वे यमुना के किनारे पर स्थित पेड़ों पर तथा पर्वत रूप में जन्म लेकर गोवर्धन पर्वत पर पत्थर के रूप में रहना चाहते हैं, जिससे वे किसी भी प्रकार से श्रीकृष्ण के समीप रह सके।

2. सभी गोपियाँ यशोदा माता के किस सुख का वर्णन करने में असमर्थ हैं?

उ०– सभी गोपियाँ यशोदा माता के उस सुख का वर्णन करने में असमर्थ हैं, जो उन्हें श्रीकृष्ण को पुत्र रूप में पाकर प्राप्त हुआ है। जब गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेमवश प्रात:काल के समय नंदजी के घर जाती हैं तो वे देखती हैं कि यशोदा माता श्रीकृष्ण के शरीर में तेल लगाकर आँखों में कागज लगा रही थी। वे उनकी सुंदर भौंहे सँवारकर बुरी नजर से बचाने के लिए माथे पर टीका लगा रही थी और उनके गले में सोने का हार डालकर एकाग्रता से उनके रूप को निहारकर अपने जीवन को न्यौछावर करके प्रेमवश अपने पुत्र को बार-बार पुचकार रही थी। जिसमें यशोदा को असीम सुख प्राप्त हो रहा है जिसका वर्णन करना असंभव है।

3. कवि रसखान श्रीकृष्ण के किस रूप को देखना चाहते हैं?

उ०– कवि रसखान श्रीकृष्ण के बाल रूप को देखना चाहते हैं, जिसमें श्रीकृष्ण बालक रूप में सिर पर चोटी बनाए, अपने घर के आँगन में खाते हुए घूमते हों। उनके पैरों में पायल बजती हो तथा उन्होंने पीले रंग की छोटी-सी धोती पहनी हो।

4. कृष्ण के हाथ में रोटी छीनकर उड़ जाने वाला कौआ कवि को भाग्यशाली क्यों लगा?

उ०– कवि को कृष्ण के हाथ से रोटी छीनकर उड़ जाने वाला कौआ इसलिए भाग्यशाली लगा क्योंकि अपने भाग्य के कारण ही उस कौवे को श्रीकृष्ण की जूठी माखन रोटी खाने का अवसर प्राप्त हुआ और उसे श्रीकृष्ण का सामीप्य प्राप्त हुआ।

5. जब श्रीकृष्ण वन में गाय चराने जाते थे, तो उस समय ब्रज वासियों की मनोदशा कैसी हो जाती थी?

उ०– जब श्रीकृष्ण वन में गाय चराने जाते थे, तो उस समय ब्रजवासियों की मनोदशा ऐसी हो जाती थी, जैसे किसी ने उन पर जादू कर दिया हो और कोई उनके हृदयों में समा गया हो। जिसके कारण सभी ब्रजवासी बिना किसी लिहाज या शर्म के श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करने लगते हैं।

6. गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी को अपनी सौतन क्यों समझती हैं?

उ०– गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी को अपनी सौतन इसलिए समझती हैं क्योंकि श्रीकृष्ण बाँसुरी को दिन-रात अपने साथ रखते थे। गोपियाँ समझती थी कि श्रीकृष्ण अब बाँसुरी के वश में हो गए हैं इसलिए वे अब उनसे प्रेम नहीं करेंगे, वे तो सिर्फ बाँसुरी से ही प्रेम करते हैं।

7. गोपियाँ ब्रज को क्यों छोड़ देना चाहती हैं?

उ०– गोपियाँ बाँसुरी से ईर्ष्या के कारण ब्रज को छोड़कर चली जाना चाहती हैं क्योंकि बाँसुरी ने कृष्ण को अपने प्रेम में मोहित कर लिया है और वह हमेशा गोपियों को जलाती रहती है। इसलिए वह ब्रज से भाग जाना चाहती है, क्योंकि ब्रज में श्रीकृष्ण के प्रेम से वंचित होकर उनका ब्रज में रहना कठिन था।

8. सखी के कहने पर गोपियाँ कौन-कौन से रूप बनाने को तैयार हैं?

उ०– सखी के कहने पर गोपियाँ अपने सिरों पर मोर पंख धारण करने, गुंजाओं की माला गले में पहनने, पीले वस्त्र पहनने व हाथ में लाठी लेकर ग्वालों के साथ-साथ गाय चराते हुए वनों में घूमने को तैयार हैं। वे कृष्ण के सभी वेश को धारण करने को पूर्णरूप से तैयार हैं।

9. कृष्ण की कौन-सी छवि गोपियों की आँखों को शांति प्रदान करती है?

उ०– कृष्ण की वनों से वापस लौटने की छवि अर्थात् गाय चराने के बाद जब सांयकाल में गाय के पैरों की धूल श्रीकृष्ण के माथे पर, उनके गले में वन की पुष्पों की माला होती है और जब गाय उनके आगे-आगे तथा ग्वाले उनके पीछे मधुर स्वर में गाते हुए चलते हैं, तब श्रीकृष्ण की मनमोहक छवि गोपियों की आँखों को शांति प्रदान करती है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. रसखान जी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– रसखान सगुण काव्यधारा की कृष्णाश्रयी शाखा के मुस्लिम कवि थे। हिंदी-साहित्य में रीतिकालीन रीतिमुक्त कवियों में रसखान का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में ईश्वर के निर्गुण व सगुण दोनों ही रूपों का वर्णन अत्यधिक सुंदर रूप से किया है। डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी के शब्दों में, '' रसखान भक्तिकाल के सुप्रसिद्ध लोकप्रिय एवं सरस कवि थे। उनके सवैये हिंदी-साहित्य में बेजोड़ हैं।''

जीवन-परिचय– कृष्णभक्त कवि रसखान का मूल नाम सैयद इब्राहिम था तथा वे शाही खानदान से संबंधित थे। उनका जन्म 1548 ई. (अनुमानित) में माना जाता है। ये दिल्ली के आसपास के रहने वाले थे। बाद में वे ब्रज में चले आए और फिर जीवन पर्यंत यहीं रहे। मूलत: मुसलमान होते हुए भी वे कृष्ण भक्त थे। श्रीरामचरितमानस का पाठ सुनकर इनके मन में काव्य-रचना की प्रेरणा हुई। इनकी भगवद् भक्ति को देखकर बल्लभाचार्य के सुपुत्र गोसाई बिट्ठलनाथ ने इन्हें अपना शिष्य बना लिया। कवि रसखान कृष्ण की भक्ति में अत्यधिक तल्लीन हो गए थे। उन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में भी कहा है कि वे अगले जन्मों में भी ब्रजभूमि को त्यागना नहीं चाहते भले ही पशु, पक्षी, पत्थर आदि के रूप में ही क्यों न जन्म मिले। इनका निधन 1628 ई. (अनुमानित) में हुआ।

साहित्यिक परिचय– रसखान की कविता का मूलभाव कृष्ण भक्ति है। कृष्ण प्रेम में आकृष्ट होकर वे ब्रजभूमि में बस गए थे। उनकी कविता में प्रेम, भक्ति, शृंगार व सौंदर्य का अनुपम मेल हुआ है। कृष्ण के रूप लावण्य की जो झाँकी उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत की, वह अत्यंत मनोहर बन पड़ी है। मुसलमान होते हुए भी रसखान कृष्ण भक्ति में सराबोर ऐसे भक्त कवि थे, जिनके लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है–

इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिंदू वारिए।

रसखान ने अपनी कविता कवित्त, सवैया और दोहों में लिखी है। इन तीनों छंदों पर उनका पूरा अधिकार था। उनके सवैये जनता में विशेष लोकप्रिय हुए। अपनी रसपूर्ण कविता के कारण वे अपने नाम को सार्थक करते हुए वास्तव में रस की खान थे।

2. रसखान जी की रचनाओं एवं भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– रचनाएँ– रसखान की रचनाएँ कृष्ण प्रेम से सराबोर हैं। अब तक इनकी चार कृतियाँ उपलब्ध हुई हैं—

(अ) प्रेम-वाटिका (ब) सुजान रसखान

(स) बाल लीला (द) अष्टयाम

इन रचनाओं का संकलन 'रसखान रचनावली' के नाम से भी किया गया है। कुछ विद्वानों का मत है कि रसखान की केवल दो रचनाएँ ही प्रामाणिक हैं—सुजान रसखान और प्रेम-वाटिका।

भाषागत विशेषताएँ– रसखान ब्रजभाषा के कवि हैं। उनकी भाषा सरल, सुबोध व सहज है। उसमें आडंबर-विहीनता है। अलंकारों का सहज प्रयोग उनके काव्य में हुआ है। शब्दों के माध्यम से ऐसे गतिशील चित्र उन्होंने अंकित किए हैं, जिससे भाषा में चित्रोपमता का गुण आ गया है। रसखान ने अपनी रचनाओं में कवित्त, सवैया तथा दोहों छंदों का प्रयोग किया है। इनकी कविताओं में प्रेम, भक्ति, श्रृंगार व सौंदर्य का अनुपम मेल हुआ है। कृष्ण के रूप लावण्य की इन्होंने गोपी रूप में भक्ति की है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्तिभाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) मानुष हौं तौ वही ..... कदंब की डारन।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'रसखान' द्वारा रचित 'रसखानि ग्रंथावली' से 'सवैये' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद्य मे रसखान ने पुनर्जन्म में विश्वास व्यक्त किया है और अगले जन्म में श्रीकृष्ण की जन्म-भूमि (ब्रज) में जन्म लेने एवं उनके समीप ही रहने की कामना की है।

व्याख्या– रसखान कवि कहते हैं कि हे भगवान! मैं मृत्यु के बाद अगले जन्म में यदि मनुष्य के रूप में जन्म प्राप्त करूँ तो मेरी इच्छा है कि मैं ब्रजभूमि में गोकुल के ग्वालों के मध्य निवास करूँ। यदि मैं पशु योनि में जन्म ग्रहण करूँ, जिसमें मेरा कोई वश नहीं है, फिर भी मेरी इच्छा है कि मैं नन्द जी की गायों के बीच विचरण करता रहूँ। यदि में अगले जन्म में पत्थर ही बना तो भी मेरी इच्छा है कि मैं उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ, जिसे आपने इंद्र का घमंड चूर करने के लिए और जलमग्न होने से गोकुल ग्राम की रक्षा करने के लिए अपनी अँगुली पर छाते के समान उठा लिया था। यदि मुझे पक्षी योनि में भी जन्म लेना पड़ा तो भी मेरी इच्छा है कि मैं यमुना नदी के किनारे स्थित कदंब वृक्ष की शाखाओं पर ही निवास करूँ।

काव्यगत सौंदर्य– 1. रसखान ने यहाँ श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम की अद्भुत अभिव्यक्ति की है। वे पुर्नजन्म लेने पर कृष्ण की प्रिय वस्तुओं एवं गोकुल की निर्जीव वस्तुओं के रूप को प्राप्त करने की कामना करते हैं। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शांत एवं भक्ति **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास **7. छंद–** सवैया।

(ब) धूरि भरे अति ..... गयौ माखन-रोटी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद्य में कवि ने बालक कृष्ण के मोहक रूप का चित्रण किया है। श्रीकृष्ण के सौंदर्य को देखकर एक गोपी अपनी सखी से उनके सौंदर्य का वर्णन करती है।

व्याख्या– हे सखी! श्यामवर्ण के कृष्ण धूल से धूसरित हैं और अत्यधिक शोभायमान हो रहे हैं। वैसे ही उनके सिर पर सुंदर चोटी सुशोभित हो रही है। वे खेलते और खाते हुए अपने घर के आँगन में विचरण कर रहे हैं। उनके पैरों में पायल बज रही है और वे पीले रंग की छोटी-सी धोती पहने हुए हैं। रसखान कवि कहते हैं कि उनके उस सौंदर्य को देखकर कामदेव भी उन पर अपनी कोटि-कोटि कलाओं को न्योछावर करता है। हे सखी! उस कौवे के भाग्य का क्या कहना, जो कृष्ण के हाथ से मक्खन और रोटी छीनकर ले गया। भाव यह है कि कृष्ण की जूठी मक्खन-रोटी खाने का अवसर जिसको प्राप्त हो गया, वह धन्य है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत छंद में रसखान ने श्रीकृष्ण के बाल रूप का अत्यधिक मोहक चित्र प्रस्तुत किया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** चित्रात्मक एवं मुक्तक **4. रस–** श्रृंगार एवं भक्ति **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास

7. छंद– सवैया।

(स) मोर-पखा सिर..... अधरा न धरौंगी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत सवैये में कृष्ण के वियोग में व्याकुल गोपियों की मनोदशा का मोहक वर्णन किया गया है। कृष्ण-प्रेम में मग्न गोपियाँ कृष्ण का वेश धारणकर अपने हृदय को सांत्वना देती हैं।

व्याख्या– एक गोपी अपनी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी! मैं तुम्हारे कहने से अपने सिर पर मोर के पंखों से बना मुकुट धारण करूँगी, अपने गले में गुंजा की माला पहन लूँगी, कृष्ण की तरह पीले वस्त्र पहनकर और हाथ में लाठी लिए हुए ग्वालों के साथ गायों को चराती हुई वन-वन घूमती रहूँगी। ये सभी कार्य मुझे अच्छे लगते हैं और तेरे कहने से मैं कृष्ण के सभी वेश भी धारण कर लूँगी, परंतु उनके होठों पर रखी हुई बाँसुरी का अपने होठों से स्पर्श नहीं करूँगी। तात्पर्य यह है कि कृष्ण गोपियों के प्रेम की परवाह न करके दिनभर बाँसुरी को साथ रखते हैं और उसे अपने होंठों से लगाए रहते हैं; अत: गोपियाँ उसे सौत मानकर उसका स्पर्श भी नहीं करना चाहती हैं; क्योंकि वह श्रीकृष्ण के ज्यादा ही मुँह लगी हुई है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत छंद में रसखान ने कृष्ण-प्रेम में व्याकुल गोपियों की मनोदशा का अत्यंत हृदयग्राही और मार्मिक चित्रण किया है। वे कृष्ण की अनुपस्थिति में उनका रूप धरकर अपने मन को संतोष देती हैं, किंतु ईर्ष्या के कारण बाँसुरी को होठों से नहीं लगाती हैं। वे कृष्ण के हर समय बाँसुरी को होठों से लगाए रखने के कारण उससे ईर्ष्या करती हैं। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शृंगार **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास, यमक एवं श्लेष **7. छंद–** सवैया।

(द) गोरज बिराजै ..... आवै रसखानि री।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'रसखान' द्वारा रचित 'रसखानि ग्रंथावली' से 'कवित्त' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में सांय के समय वन से गायों के साथ लौटते हुए कृष्ण की अनुपम शोभा का वर्णन एक गोपी अपनी सखी से कर रही है।

व्याख्या– गोपी कहती है कि हे सखी! वन से गायों के साथ लौटते हुए कृष्ण के मस्तक पर गायों के चलने से उड़ी धूल सुशोभित हो रही है। उनके गले में वन के पुष्पों की माला पड़ी हुई है। कृष्ण के आगे-आगे गायें चल रही है और पीछे मधुर स्वर में गाते हुए ग्वाल-बाल चल रहे हैं। जितनी मधुर और बाँकी श्रीकृष्ण की चितवन है, उतनी ही बाँकी उनकी धीमी-धीमी मुस्कान है। उनकी इस मधुर छवि के अनुरूप ही उनकी वंशी की मधुर-मधुर तान है। हे सखी! कदंब वृक्ष के पास यमुना नदी के किनारे खड़े कृष्ण के पीले वस्त्रों का फहराना, जरा अटारी पर चढ़कर तो देख लो। रस की खान वह श्रीकृष्ण चारों ओर सौंदर्य और प्रेम-रस की वर्षा करते हुए शरीर और मन की जलन को शांत कर रहे हैं। उनका सौंदर्य नेत्रों की प्यास को बुझा रहा है और प्राणों को अपनी ओर खींचकर रिझा रहा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इस छंद में रसखान ने गोचारण से लौटते हुए कृष्ण के मनोहारी रूप का सजीव चित्रण किया है। **2.** कृष्ण के रूप पर मुग्ध गोपियों की दशा का भी सजीव अंकन हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास एवं श्लेष **8. छंद–** कवित्त।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) पाहन हौं तो वही गिरी को, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर-धारन।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि रसखान अगले जन्म में श्रीकृष्ण की जन्म-भूमि व्रज में जन्म लेकर उनके समीप रहने की कामना करते हुए कहते हैं कि यदि मैं अगले जन्म में पत्थर बनूँ, तो मैं उसी पर्वत गोवर्धन का पत्थर बनने की कामना करता हूँ जिसे श्रीकृष्ण ने इंद्र का घमंड चूर करने के लिए छत्र की तरह उठा लिया था अर्थात् मैं किसी भी रूप में श्रीकृष्ण के समीप रहना चाहता हूँ।

(ब) काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गया माखन-रोटी।

भाव स्पष्टीकरण– भाव यह है कि रसखान जी कहते हैं कि वह कौआ बड़ा भाग्यशाली है जो बालक श्रीकृष्ण के हाथ से मक्खन रोटी लेकर उड़ गया है, जिससे उसे श्रीकृष्ण की जूठी मक्खन-रोटी खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है अर्थात् वह कौआ श्रीकृष्ण की समीपता को प्राप्त कर सका है।

(स) गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल, आगे गैयाँ पाछें ग्वाल मृदु बानि री।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि रसखान अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि गोचारण से लौटते हुए श्रीकृष्ण के मस्तक पर गायों के चलने से उड़ी धूल सुशोभित हो रही है और गले में वनों के पुष्पों से बनी माला पड़ी हुई है। श्रीकृष्ण के आगे- आगे गाय व पीछे-पीछे मीठे स्वर में गाते हुए ग्वाले चल रहे हैं। यह दृश्य बहुत ही मधुर व मनोरम है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रसखान किस काल से संबंधित हैं–

(अ) आदिकाल (ब) भक्तिकाल

(स) **रीतिकाल** (द) आधुनिक काल

2. रसखान की रचनाएँ किस काव्यधारा के अंतर्गत आती हैं?

(अ) रामाश्रयी काव्यधारा (ब) **कृष्णाश्रयी काव्यधारा**

(स) प्रेमाश्रयी काव्यधारा (द) ज्ञानाश्रयी काव्यधारा

3. निम्नलिखित रचनाओं में से कौन-सी रचना कवि रसखान द्वारा रचित नहीं है?

(अ) प्रेम-वाटिका (ब) सुजान रसखान

(स) **दीपशिखा** (द) इनमें से कोई नहीं

4. कवि रसखान ने किस भाषा में काव्य-रचना की है?

(अ) फारसी में (ब) अवधी में

(स) अरबी में (द) **ब्रजभाषा में**

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार, रस व उसके स्थायी भाव की विवेचना कीजिए–

(अ) मानुष हौं तौ वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।

उ०– अलंकार – अनुप्रास

रस – भक्ति

स्थायी भाव – देव-विषयक रति

(ब) तेल लगाइ लगाइ कै अंजन, भौंहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।

अलंकार – पुनरुक्तिप्रकाश

रस – वात्सल्य

स्थायी भाव – संतान-विषयक रति

(स) काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सौं लै गयौ माखन-रोटी।।

उ०– अलकंार – अनुप्रास

रस – भक्ति

स्थायी भाव – देव-विषयक रति

(द) मोहिनी तानि गोधन गावत, बेनु बजाई रिझाइ गयौ है।

उ०– अलंकार – अनुप्रास

रस – शृंगार

स्थायी भाव – रति

(य) या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

अलंकार – अनुप्रास एवं यमक

रस – शृंगार

स्थायी भाव – रति

2. निम्नलिखित पद्यांश में काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) आजु गई हुती भोर ही हौं, रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं।
वाकौ जियौ जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यौ नहिं।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत पद्यांश में गोपी के श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम का वर्णन किया गया है। **2.** यहाँ यशोदा माता के श्रीकृष्ण को पुत्र रूप में पाने के सुख का अद्‌भुत वर्णन हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वात्सल्य **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास **8. छंद–** सवैया।

(ब) जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आओ सबै सखी, भागि चलैं अब ब्रज मैं बँसुरी रहिहै।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत छंद में गोपियों की मुरली के प्रति स्वाभाविक ईर्ष्या का सजीव वर्णन किया गया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** चित्रात्मक मुक्तक **4. रस–** शृंगार **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास, मानवीकरण **7. छंद–** सवैया।

(स) जा दिन तें वह बंद को छोहरा, या बन धेनु चराइ गयौ है।
मोहनि तानि गोधन गावत, बेनु बजाइ रिझाइ गयौ है।।
वा दिन सो कुछ टोना सो कै, रसखानि हियै मैं समाई गयौ है।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, विकाइ गयौ है।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने गोपियों की कृष्ण-भक्ति की अभिव्यक्ति अत्यंत कलात्मक रूप से की है। **2.** गोपियों के कृष्ण प्रेम का सजीव वर्णन हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** चित्रात्मक मुक्तक **5. रस–** शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास, अतिशयोक्ति **8. छंद–** सवैया।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।